7

WOODS

हिंदी दर्पण

अध्यापक सहायक-पुस्तिका

हिंदी दर्पण–7

1. इतने ऊँचे उठो

(क) 1. गगन के 2. वर्तमान का 3. गतिमय 4. धरती को 5. द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी **(ख)** 1. नए हाथ से वर्तमान का रूप सँवारो, नई तूलिका से चित्रों के रंग उभारो। 2. देखो इस सारी दुनिया को एक दृष्टि से, सिंचित करे धरा समता की भाव-वृष्टि से। 3. सूरज, चाँद, चाँदनी, तारे, सब हैं प्रतिपल साथ हमारे। **(ग)** प्रस्तुत कविता में बालक धरती को स्वर्ग बनाना चाहते हैं। वे सूरज, चाँद, चाँदनी और तारे के समान कुरूप को भी रूपवान बनाना चाहते हैं। **(घ)** 1. क्योंकि इससे ही धरती स्वर्ग बन सकती है। 2. कवि ने धरती पर स्वर्ग लाने की इच्छा प्रकट की है। 3. कवि के अनुसार, हमारा देश जाति, रंग, धर्म, वेश आदि के भेदभावों की ज्वालाओं से जल रहा है। 4. युग के नवनिर्माण के लिए सृजन जितना वास्तविक बनने व सक्रिय रहकर निरंतर कार्य करने के सुझाव दिए हैं। 5. धरती को स्वर्ग कुरूप को भी अच्छा रूप और आकर्षण देकर बनाया जा सकता है। 6. शांतिपूर्वक देश निर्माण हेतु अपने जगत कर्तव्य पथ पर अग्रसर होकर कार्य कर सकते हैं। **भाषा की बात–(क) स्वर्ग**–जन्नत, परलोक **चाँद**–चंद्रमा, शशि **गगन**–आकाश, नभ **दुनिया**–संसार, जगत **पवन**–वायु, समीर **(ख)** ज्वाला, धर्म, शीतल, भेद, आकर्षण, वर्तमान, प्रवाह, दृष्टि **(ग)** प्रबल अधिक बलवान, निडर साहसी, प्रहार वार, आचरण व्यवहार, स्वदेश अपना देश, असंभव जो संभव न हो, प्रतिदिन रोज। **करने की बारी**–स्वयं करें।

2. आम जितना गेहूँ

(क) 1. गेहूँ का दाना 2. आम जितना बड़ा 3. राजा को 4. लाठी की 5. चौधरी **(ख)** 1. 3 2. 7 3. 3 4. 7 5. 3 6. 7 **(ग)** 1. पंडितों ने राजा से 2. राजा ने पंडितों से 3. किसान ने राजा से 4. किसान पितामह ने राजा से 5. किसान पितामह ने राजा से 6. राजा ने किसान पितामह से **(घ)** 1. राजा ने अपने दरबार के नवरत्न पंडित आम जितने बड़े दाने की वास्तविकता जानने को बुलाए। 2. मुसाफिर ने वहाँ के राजा के हाथ परोपकार के नाम पर गेहूँ के दाने को बेचकर दौलत कमाई। 3. पंडितों की सलाह मानकर राजा ने हुक्म दिया कि बड़ी-बड़ी उम्र के किसान लोग उसके सामने लाए जाएँ ताकि वे उसे बता सकें कि कहाँ और कब गेहूँ का दाना इतना बड़ा उगा करता था। 4. राजा ने किसान से पूछा,''बता सकते हो, कि ऐसा दाना कहाँ और कब उगता था? क्या तुमने ऐसे बड़े दानों का अनाज कभी खरीदा है, या कभी अपने खेत में बोया या काटा है?'' 5. राजा ने किसान पितामह से ये दो अन्य प्रश्न पूछे (i) धरती पहले ऐसा दाना कैसे देती थी और अब देना क्यों बंद कर दिया? (ii) आपका पोता तो बैसाखियों से चलकर यहाँ आया, बेटा एक लाठी के सहारे पहुँचा और आप बिना किसी सहारे के चलकर आ गए। आपकी आँखों की रोशनी भी उजली है, दाँत मज़बूत हैं और वाणी साफ़ और मधुर है, यह कैसे हुआ?'' 6. आज के लोगों ने अपनी मेहनत के भरोसे रहना छोड़ दिया है और दूसरों की मेहनत के भरोसे रहते हैं। पुराने ज़माने में लोग ईश्वर के नियम का पालन करते थे और संयम से रहते थे। जो उनका था, वही उनका था। दूसरों की मेहनत और उनके फल पर उन्हें लोभ नहीं होता था।'' **भाषा की बात–(क) अभि**–अभियुक्त, अभिमान, अभियान **परा**–पराभव, पराक्रम, पराजय **सम**– समाहार, समवयस्क, समाचार। **अनु**–अनुकूल, अनुसार, अनुभव **वि**–विशेष, विज्ञान, विशुद्ध **(ख) आँख**–नेत्र, चक्षु **पोथी**–ग्रंथ, पुस्तक **किसान**–कृषक, खेतिहर **नदी**–सरिता, निर्झरणी **पिता**–जनक, तात **(ग)** आसान, बच्चा, गुजारिश, उत्तर, छोटा, अधिकता। **करने की बारी**–स्वयं करें।

3. काबुलीवाला

(क) 1. 5 वर्ष 2. रामदयाल 3. ये दोनों 4. रहमत 5. माघ माह में **(ख)** 1. शरद् 2. खून 3. सगाई। 4. ब्याह 5. लड़की **(ग)** 1. माँ ने मिनी से 2. काबुली वाले ने मिनी से 3. काबुली वाले ने लेखक से। **क्यों** (1) क्योंकि माँ ने या पिता ने मिनी को अठन्नी नहीं दी थी। (2) वह मजाक में मिनी से कहता है। (3) क्योंकि वह बच्ची मिनी से मिलने आता था। **(घ)** 1. काबुलीवाला एक फेरीवाला व काबुल का रहने वाला था। वह मेवे बेचकर धन कमाने के लिए भारत आया था। 2. काबुलीवाले ने उसे अठन्नी दी थी। 3. काबुलीवाले ने रोज़ पिस्ता-बादाम दे-देकर मिनी के छोटे-से हृदय पर अधिकार जमा लिया था। 4. लेखक ने मिनी के विवाह की बात न कहकर काबुलीवाले से यह कहा कि घर में ज़रूरी काम है क्योंकि काबुलीवाला जेल से आया था। लेखक चाहता था कि उसकी उपस्थिति से मिनी के विवाह में कोई बाधा न आए। 5. जब लेखक के दिमाग में विचार आया कि काबुलीवाले की बेटी भी उसकी बेटी की तरह विवाह योग्य हो गई है और वह आठ बरसों से अपने पिता से नहीं मिल पाई है। इस बात से लेखक का हृदय द्रवित हो गया। वह भूल गया कि वह एक उच्चवंश का रईस है और काबुलीवाला एक मेवावाला है, वह महसूस करने लगा कि वह भी मेरी तरह पिता है। **भाषा की बात–(क) घर**–गृह, आलय **हाथी**–गज, हस्ति **आकाश**–नभ, आसमान **बेटी**– तनया, पुत्री **पिता**–जनक, तात **(ख)** ऋतुऐं, बच्चियाँ, शहनाइयाँ, खिड़कियाँ, घड़ियाँ **(ग)** 1. कैसा वेश है इसका! यह तो रहमत नहीं लगता। 2. अरे मिनी, इधर आ, यह मेवा ले। 3. मैंने कहा, ''रहमत तुमने ऐसा क्यों किया?'' 4. रहमत, तुम अपने देश चले जाओ। 5. देखो बापू जी, ''भोला कहता है, आकाश में हाथी सूँड़ से पानी फेंकता है।'' **करने की बारी**–स्वयं करें।

4. आचार्य सुश्रुतः एक शल्य-चिकित्सक

(क) 1. आयुर्वेद पर 2. एक पाठशाला 3. दिवोदास को 4. दिवोदास 5. हृदय रोग **(ख)** 1. दिवोदास 2. धन्वंतरि 3. विश्वामित्र 4. काया शृंगार 5. सुश्रुत संहिता **(ग)** 1. लेखक ने वाराणसी के वैभवशाली इतिहास को महान बताया है। 2. दुर्घटनाओं में अथवा अस्त्र-शस्त्र के वार से फट गई आँतों के दो किनारों को, एक-दूसरे से जोड़ने (टाँके लगाने) के लिए सुश्रुत ने एक विलक्षण तकनीक खोज निकाली थी। इसके लिए वे एक किस्म के चींटों का उपयोग किया करते थे। फटी हुई आँत के दो किनारों को साथ मिलाकर, उस पर चींटे छोड़ दिए जाते थे। वे चींटे अपने दाँतों से उस पर चिपक जाते, जिससे फटी हुई आँत के दो किनारे एक तरह से आपस में सिल जाते थे। अब चींटों का शेष भाग काटकर अलग कर दिया जाता और उदर के बाहरी ऊतकों और त्वचा पर टाँके कस दिए जाते। 3. मानव के भीतरी अंगों की जानकारी प्राप्त करने के लिए, सुश्रुत ने एक अनूठी विधि खोज निकाली थी। मृत शरीर को पहले किसी वज़नदार वस्तु के साथ बाँधकर किसी छोटी-सी नहर में डाल दिया जाता था। एक सप्ताह बाद जब बाहरी त्वचा और ऊतक फूल जाते, तब झाड़ियों और लताओं से बने बड़े-बड़े ब्रुशों द्वारा उन्हें शरीर से अलग कर दिया जाता था। इससे शरीर के आंतरिक अंगों की रचना स्पष्ट हो जाती थी। 4. शल्य क्रिया का प्रारंभिक प्रशिक्षण देने के लिए, सुश्रुत अपने शिष्यों को कंद-मूल, फल-फूल, पेड़-पौधों की लताओं, पानी से भरी मशकों, चिकनी मिट्टी के ढाँचों और मलमल से बने मानव-पुतलों पर दिनोंदिन अभ्यास करवाते। चीरा कैसे लगाना है, उसे कितना लंबा, कितना गहरा रखना है, इसका अभ्यास कराने के लिए शिष्यों को ककड़ी, करेला, तरबूज़ जैसे फलों और सब्ज़ियों पर कई-कई दिनों तक अभ्यास कराते

थे। किसी घाव की गहराई कैसे पहचानें और भरने के लिए क्या तकनीक अपनाएँ-इसका प्रशिक्षण दीमक द्वारा खाई हुई लकड़ी से देते थे जिससे कि शिक्षार्थी रुग्ण शरीर की स्थिति का सही अनुमान लगा सकें। अभ्यास के दौरान कमल के फूल की डंडी, शिरा (रक्तवाहिनी) बन जाती, जिसे शिष्य को सुई द्वारा बेधना पड़ता था। इसी तरह टाँका लगाने का प्रशिक्षण तरह-तरह के कपड़ों और चमड़े पर देते थे। खुरदरे चमड़े पर, जिस पर से बाल न हटाए गए हों, खुरचने की कला सिखाते थे। पट्टी बाँधने का ज्ञान देने के लिए मानव पुतलों का सहारा लेते थे। 5. सुश्रुत शल्य चिकित्सक तो थे ही, क्योंकि सुश्रुत प्राचीन समय में ही गंभीर रोगों की शल्य चिकित्सा कर देते थे। वे श्रेष्ठ गुरु भी थे क्योंकि वे अपने शिष्यों को शल्य चिकित्सा का पूर्ण प्रशिक्षण देते थे। **भाषा की बात–(क) आभूषण**–जेवर, गहना **उत्सव**–पर्व, त्योहार **गंगा**–सुरसरि, देवनदी **राजा**–नृप, नरेश **भगवान**–ईश्वर, प्रभु **(ख)** स्वयं करें। **(घ) विद्या**–विद्यार्थी, विद्यालय **शिक्षा**– शिक्षार्थी, शिक्षालय **यश**–यशस्वी, यशगान **गुण**–गुणी, गुणवान **करने की बारी**–स्वयं करें।

5. प्रायश्चित

(क) 1. चौदह 2. रामू की बहू की 3. दरवाज़े की देहरी पर 4. बिल्ली पर 5. मिसरानी ने **(ख)** 1. 7 2. 3 3. 7 4. 3 5. 7 **(ग)** 1. रामू की माँ ने पंडित से 2. पंडित ने रामू की माँ से 3. पंडित ने रामू की माँ से 4. रामू की माँ ने पंडित से 5. महरी ने रामू की माँ से **(घ)** 1. रामू की बहू कबरी बिल्ली से घृणा इसलिए करती थी क्योंकि कबरी बिल्ली उसके द्वारा तैयार खीर, घी, मलाई खा जाती थी, दूध पी जाती थी जिसके कारण उसे साँस से डाँट सुननी पड़ती थी। 2. कटघरा कबरी बिल्ली को पकड़ने के लिए मँगाया गया। उसमें दूध, मलाई, घी और बिल्ली को स्वादिष्ट लगने वाले विविध प्रकार के व्यंजन रखे। 3. बिल्ली की हत्या की खबर पाकर पंडित परमसुख ने पंडिताइन से कहा, ''भोजन न बनाना। लाला घासीराम की पुत्रवधू ने बिल्ली मार डाली। प्रायश्चित होगा, पकवानों पर हाथ लगेगा।'' 4. पंडित ने दान के लिए करीब दस मन गेहूँ, एक मन चावल, एक मन दाल, मन भर तिल, पाँच मन जौ, पाँच मन चना, चार किलो घी और मन भर नमक बताया। 5. पंडित ने बिल्ली की हत्या के पाप से मुक्त होने के लिए एक सोने की बिल्ली बनवाकर बहू से दान करवाने को तथा सोने की बिल्ली दान देने के बाद इक्कीस दिन का पाठ बताया। इक्कीस दिन के पाठ के इक्कीस रुपये और इक्कीस दिन तक दोनों समय पाँच-पाँच ब्राह्मणों को भोजन करवाना बताया। 6. प्रस्तुत कहानी पढ़कर हमें यह सीख मिलती है कि हमें समाज में फैली रूढ़ियों एवं गलत परंपराओं से बचकर रहना चाहिए। **भाषा की बात–(क)** चाबी, आँखें, खुशियाँ, बिल्लियाँ, पोथी, बालिका, तोले, कटोरा, चना, बहुएँ **(ख)** स्वयं करें। **(ग)** पंडितजी मुस्कुराए। अपनी तोंद पर हाथ फेरते हुए उन्होंने कहा–''बिल्ली कितने तोले की बनवाई जाए? अरे, रामू की माँ, शास्त्रों में तो लिखा है, कि बिल्ली के वज़न जितनी सोने की बिल्ली बनवाई जाए। लेकिन अब कलयुग आ गया है, धर्म, कर्म का नाश हो गया है, श्रद्धा नहीं रही। इसलिए रामू की माँ, बिल्ली के वज़न जितनी सोने की बिल्ली क्या बनेगी, क्योंकि बिल्ली बीस-इक्कीस सेर से कम की क्या होगी? हाँ, कम-से-कम इक्कीस तोले की सोने की बिल्ली बनवाकर दान करवा दो और आगे तो अपनी-अपनी श्रद्धा। **करने की बारी**–स्वयं करें।

6. बहुत दिनों के बाद

(क) 1. नागार्जुन 2. युगधारा 3. किशोरियों के 4. पगडंडी को **(ख)** 1. कवि कहना चाहता है कि खेतों में पकी फसलों को देखकर मन प्रसन्न हो जाता है। 2. कवि ने गाँव में किशोरियों के गीत, फूलों की गंध, गन्ने के स्वाद आदि का आनंद लिया। 3. 'बहुत दिनों के बाद' से तात्पर्य है कि लेखक गाँव बहुत दिनों बाद आया था। 4. कवि मौलसिरी के फूलों को 'टटके फूल' कह रहा है क्योंकि वे एकदम ताजा हैं। 5. इस वाक्य से अर्थ निकलता है- ताजे फूलों की खुशबू लेना, गाँव का प्राकृतिक दृश्य देखना, गाँव के स्वादिष्ट खाद्य पदार्थों का आनंद लेना, धान कूटती किशोरियों के गाने के मधुर शब्द सुनना, गाँव की चंदन जैसी धूल को छूना। **भाषा की बात–(क)** गन्ने, किशोरियाँ, कोयलें, फ़सलें, पगडंडियाँ, गले **(ख) दिन**- दिवस, वासर **फूल**-पुष्प, सुमन। **करने की बारी–**स्वयं करें।

7. पूस की रात

(क) 1. हल्कू की पत्नी 2. तीन रुपये 3. कंबल खरीदने हेतु 4. उसका कुत्ता **(ख)** 1. हल्कू के खेत से कुछ दूर आमों का बाग था। 2. पतझड़ शुरू हो गया था। इसलिए बाग में पत्तियों का ढेर लगा हुआ था। 3. हल्कू ने सोचा चलकर पत्तियाँ बटोरूँ और उन्हें जलाकर खूब तापूँ। 4. हल्कू के खेत– हल्कू का खेत से, आमों का बाग–आमों का बाग से, पत्तियों का ढेर-ढेर का पत्तियों से **(ग)** 1. हल्कू तथा मुन्नी में सहना का उधार चुकाने को लेकर बहस हो रही थी अंत में मुन्नी ने हल्कू को सहना का उधार चुकाने के लिए पैसे दे दिए। 2. ठंड़ से बचने के लिए हल्कू ने जबरा को अपनी गोद में सुला लिया। कुत्ते की देह से न जाने कैसी दुर्गंध आ रही थी, पर वह उसे अपनी गोद से चिपकाए हुए ऐसे सुख का अनुभव कर रहा था, जो महीनों से उसे न मिला था। जबरा शायद समझ रहा था, कि स्वर्ग यही है, और हल्कू की पवित्र आत्मा में तो उस कुत्ते के प्रति घृणा की गंध तक नहीं थी। अपने किसी अभिन्न मित्र या भाई को भी वह इतनी ही तत्परता से गले लगाता। इस बात से पता चलता है कि जबरा और हल्कू में अनोखी मैत्री थी। 3. हल्कू ने ठंड से बचने के लिए दोनों घुटनों को छाती से मिलाकर सिर को उसमें छिपा लिया, आम के बाग से पत्तियाँ इकट्ठा करके उनमें आग लगाई। 4. हल्कू ने आग जलाने के लिए बाग से सूखी पत्तियाँ इकट्ठी कीं। 5. फ़सल नष्ट होने पर हल्कू इसलिए प्रसन्न था क्योंकि अब मजदूरी करके रात की ठंड में उसे खेत में सोना नहीं पड़ेगा।'' **भाषा की बात–(क)** कंबल, मजदूरी, सहमति, पिशाच, अकर्मण्यता, सर्वनाश, बुद्धि, ज्यों **(ख)** 1. अपना 2. अपनी 3. स्वयं 4. अपनी 5. अपनी **(ग)** स्वयं करें। **करने की बारी–**स्वयं करें।

8. पुरस्कार

(क) 1. उत्सव 2. बीते क्षणों को 3. पहला 4. द्वार 5. साथियों **(ख)** 1. हल चलाना देख रहे थे। 2. कार्य समाप्त हो गया। 3. का अनुग्रह नहीं लिया। 4. से नया राज्य बनाऊँगा। 5. मेरी भूमि ले ली गई थी। **(ग)** 1. कौशल राज्य का यह उत्सव प्रसिद्ध था–एक दिन के लिए महाराज किसान बनकर इंद्रदेव की पूजा करके हल जोतते थे। दूसरे राज्यों के युवक, राजकुमार उत्सव में भाग लेते थे। 2. मधुलिका ने राजा द्वारा दी गई स्वर्ण मुद्राओं को महाराज पर न्योछावर करके बिखेर दिया। 3. मधुलिका ने राजकुमार अरुण की मदद इसलिए की क्योंकि अरुण ने उसे रानी बनाने के लिए कहा था और वह लालच में आ गई। 4. मधुलिका ने देश प्रेम की भावना से प्रेरित होकर सेनापति को आक्रमण की सूचना दी 5. मधुलिका ने पुरस्कार में प्राणदंड माँगा। **भाषा की बात–(क)**

उत्सव–पर्व, त्योहार **रात्रि**–निशा, रजनी **पथिक**–मुसाफिर, यात्री **नरेश**–राजा, नृप **(ख)** अस्वीकार, अवज्ञा, अनिच्छा, दिवा, अधीर, असत्य, भक्षक **(ग)** 1. में 2. के 3. में, ने 4. के, में **(घ)** स्वयं करें। **करने की बारी**–स्वयं करें।

9. राष्ट्रध्वज

(क) 1. 22 जुलाई, 1947 को 2. जन आकांक्षाओं का 3. पंडित नेहरू ने 4. 2:3 **(ख)** 1. कहानी 2. कमल 3. वंदे मातरम् 4. हौसला 5. राष्ट्रध्वज **(ग)** 1. अगस्त, 1931 में राष्ट्रध्वज स्वीकार किया गया। 2. भारतीय कांग्रेस समिति द्वारा 3. उसमें तीन तथा केसरिया, सफ़ेद एवं हरे रंग की पट्टियाँ थीं। 4. चरखा गहरे नीले रंग का था तथा सफ़ेद पट्टी पर अंकित था। 5. संबंध तत्पुरुष **(घ)** 1. हंसा मेहता ने तिरंगा संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ॰ राजेंद्र प्रसाद को 14-15 अगस्त, 1947 की मध्य रात्रि को भारत के पूर्ण स्वतंत्र होने पर भेंट किया। 2. इस ध्वज में तीन रंगों की पट्टियाँ थीं। सबसे ऊपर हरी, मध्य में सुनहरी तथा सबसे नीचे लाल रंग की पट्टी थी। हरी पट्टी में आठ कमल बने हुए थे। सुनहरी पट्टी में 'वंदे मातरम्' अंकित था। सबसे नीचे वाली पट्टी में चंद्र एवं सूर्य बने हुए थे। 3. भारतीय राष्ट्रध्वज में केसरिया रंग त्याग एवं वीरता का प्रतीक है। सफ़ेद रंग सत्य और शांति का एवं हरा रंग खुशहाली का प्रतीक है। 4. झंडे की रूपरेखा इस बात को ध्यान में रखकर बनाई गई थी कि झंडा देखने में सुंदर हो, क्योंकि राष्ट्र का प्रतीक देखने में सुंदर होना ही चाहिए। झंडा ऐसा हो जो राष्ट्र को संपूर्णता के साथ अभिव्यक्त कर सके। 5. इस पंक्ति का आशय यह है कि झंडा अपने संपूर्ण रूप में भी और अपने अलग-अलग अंगों से भी हमारे देश की अंतरात्मा, हमारी परंपराओं और हज़ारों साल की हमारी समन्वयी जीवन दृष्टि को समेकित रूप से अभिव्यक्त कर सके। **भाषा की बात–(क)** प्यार, ऊँचाई, गहराई, सुंदरता, लंबाई, चौड़ाई, राष्ट्रीयता, अध्यक्षता **(ख)** कहानियाँ, पंक्तियाँ, पट्टियाँ, तारे, तिरंगे, झंडे **(ग)** राष्ट्रीय-ध्वज, स्वतंत्र-देश, समानांतर-पट्टियाँ, प्रत्येक-नागरिक **(घ)** स्वयं करें। **करने की बारी**–स्वयं करें।

10. करीम का सुख

(क) 1. एक काश्तकार 2. ये दोनों 3. ये सभी 4. तीन 5. मोहम्मद शाह **(ख)** 1. स्वागत 2. मेहमान 3. सानी-पानी 4. मुँह 5. संजीदा **(ग)** 1. मेहमान ने मोहम्मद शाह से 2. मेहमान ने मोहम्मद शाह से 3. करीम ने मेहमानों से 4. मेहमान ने करीम की पत्नी से 5. करीम की पत्नी ने मेहमान से **(घ)** 1. करीम ने छोटे बेटे को मकान दे दिया और अच्छी संख्या में गाय-बैल भी उसे दे दिए। इस तरह उसकी चल और अचल संपदा कम पड़ गई। उसके बाद एक बीमारी फैली। उससे उसके भेड़ों के झुंड के झुंड खत्म हो गए। फिर अकाल का साल आ गया और काश्त में सूखा पड़ा। बहुत से चौपाए अगले जाड़ों में बेमौत मर गए। ऊपर से बंजारों का उत्पात हुआ और वे कई घोड़े चुराकर ले भागे। इस तरह करीम की संपदा क्षीण होने लगी। आखिर सत्तर वर्ष का होते-होते वह दिन आया कि घर का माल असबाब नीलाम-बोली में चला गया। कालीन-गलीचे, जीन-तंबू और इसी तरह की और चीज़ें घर से निकलकर बाज़ार में आने लगीं। यहाँ तक कि, आखिरी बचे बैलों की जोड़ियों से भी अलग होने की नौबत आ गई। अब खाने के भी लाले पड़ गए। धीरे-धीरे देखते-देखते करीम की सब संपदा ख़त्म हो गई। 2. बुढ़ापे में करीम और उसकी बीवी को उनके एक पड़ोसी मौहम्मद शाह ने सहारा दिया था 3. मोहम्मद शाह ने करीम के विषय में मेहमान से कहा था कि कभी वह यहाँ के सबसे मालदार आदमी थे। उनका नाम करीम है।

वह नाम आपने भी सुना होगा। 4. करीम की बीवी ने मेहमान के सामने खुशी की तलाश के विषय में बताया था कि पचास साल तक हम खुशी की तलाश में रहे; लेकिन भटकते रहे। दौलत थी, तब तक खुशी हासिल न हो सकी। अब जब सब चला गया है और मेहनत की नौकरी पर हम लोग लगे हैं, तब आकर वह खुशी भी मिली है, जिसकी हमें तलाश थी। अब हमें और कोई चाह नहीं है।'' 5. स्वयं करें। **भाषा की बात–(क)** स्वयं करें। **(ख)** 1. खेतिहर 2. धनवान 3. गांभीर्य 4. ईर्ष्यालु 5. प्रबंधक **(ग)** नया, बहुत, बुरा, पास, नौकर, छोटा, बदकिस्तमी, आगे **करने की बारी–**स्वयं करें।

11. एम० एस० सुब्बालक्ष्मी

(क) 1. सरोजिनी नायडू को 2. 24 वर्ष की आयु में 3. संगीत कलानिधि 4. 52 5. 11 दिसंबर, 2004 को **(ख)** 1. वीणा वादिका 2. माँ 3. भारत रत्न 4. दस 5. टी० सदाशिव **(ग)** 1. सुब्बालक्ष्मी का जन्म मदुरै के एक संगीतज्ञ देवदासी परिवार में हुआ था। 2. सुब्बालक्ष्मी के पति ने उनका मार्गदर्शन किया। अपने द्वारा निर्मित तमिल और हिंदी फ़िल्म 'मीरा' में उन्होंने उन्हें नायिका की भूमिका दी इससे वे हिंदी जगत में विशेष रूप से जानी जाने लगीं और पूरे देश में प्रसिद्ध हो गईं। 3. सुब्बालक्ष्मी का गायन सुरीला, स्पष्ट प्रस्तुतिकरण वाला व प्रभावशाली था। 4. उत्तर और दक्षिण भारतीय संगीत में स्वर लगाने का अंदाज़ सर्वथा भिन्न है। सुब्बालक्ष्मी जी दोनों संगीत शैलियों में दक्षता की एकमात्र और अनुपम मिसाल थीं। उस समय जब संचार माध्यमों की अधिक सुविधा नहीं थी, तब सुब्बालक्ष्मी जी ने दोनों संगीत शैलियों में उत्तर व दक्षिण के अलग-अलग स्थानों पर अपना गायन प्रस्तुत कर उत्तर और दक्षिण के बीच संगीत-सेतु का काम किया। 5. सुब्बालक्ष्मी को 'पद्मभूषण', 'मैग्सेसे पुरस्कार', भारत रत्न, 'पद्म विभूषण', 'इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। **भाषा की बात–(क) दुःख–**शोक, वेदना **नरेश–**राजा, नृप **माँ–**जननी, याता **विश्व–**संसार, दुनिया **(ख)** गायिका, संगीतज्ञ, दशक, अनुपम, सर्वोच्च, शताब्दी **(ग)** सम्राट, गायक, नायक, कोकिल **(घ)** सम्राज्ञी, सामाजिक, माधुर्य, यशस्वी, भक्ति, संयुक्त **करने की बारी–**स्वयं करें।

13. रसखान के सवैये

(क) 1. गोकुल 2. गोवर्धन 3. अपना संपूर्ण सुख वैभव 4. श्रीकृष्ण **(ख)** कवि कहता है कि यदि मेरा पुनर्जन्म हो तो मैं वही पत्थर बनूँ जिसे श्रीकृष्ण ने अपनी अंगुली पर धारण किया था। **(ग)** 1. क्योंकि ऐसा सुख और कहीं नहीं मिल सकेगा। 2. क्योंकि इन्हीं वन उपवन और सरोवर में श्रीकृष्ण ने अपनी लीलाएँ की थीं। **(घ)** 1. रसखान द्वारा पुनर्जन्म में मनुष्य बनने पर ब्रज का ग्वाला बनने, पशु बनने पर नंद का पशु बनने, पत्थर बनने पर गोवर्धन पर्वत बनने, पक्षी बनने पर ब्रज के पेड़ों पर वास करने की इच्छा से उनका ब्रजभूमि के प्रति प्रेम प्रकट होता है। 2. रसखान श्रीकृष्ण की भक्ति के लिए अपना संपूर्ण सुख, वैभव न्योछावर करने को तैयार हैं। 3. श्रीकृष्ण की आराधना शिव, गणेश, सूर्य, इंद्र व नारद भगवान करते हैं। 4. रसखान ने सवैये में ग्वाले, पशु, गोवर्धन पर्वत, पक्षी के रूप में जन्म लेने की बात कही है। 5. रसखान नंद बाबा की गायें चराने के लिए आठों सिद्धि व नौ निधि के सुख का त्याग कर सकते हैं। 6. कृष्ण को गोकुल की गोपियाँ छाछ के लिए नचाती हैं। **भाषा की बात–(क) गाय–**धेनु, गौ **निधि–**कोष, खजाना **वन–**जंगल, अरण्य **घर–**गृह, आवास **कृष्ण–**गिरधर, कन्हैया **(ख)** करोड़, मनुष्य, कमर, पत्थर, जानवर, लोटा **(ग)** अ+ख्+अं+ड्+अ, व्+य्+आ+स्+अ, स्+इ+द्+ध्+इ, क्+अ+द्+अं+ ब्+अ,

ब्+र्+अ+ज्+अ **(घ)** स्वयं करें। **करने की बारी–**स्वयं करें।

14. वर्तमान राजनीतिः एक व्यंग्य

(क) 1. चुनाव में 2. विधान सभा में 3. विधान सभा में 4. जनता 5. बेईमान व्यक्ति **(ख)** 1. उम्र बढ़ बढ़ने बाल सफ़ेद होने पर हिंदी का साहित्यकार फ्रस्ट्रेट होता है। 2. इस अवस्था में वह पुराने विद्रोह की पूँजी के सहारे, स्थायित्व की दिशा में विचार करता है। 3. कुछ सरकारी पद पा लेते हैं। कुछ स्थायी चमचे हो जाते हैं, कुछ राजनीति में घुस जाते हैं। इस देश में साहित्यकार का साहित्य पचास की उम्र तक चलता है। राजनीति उसे सत्तर तक खींच ले जाती है। 4. साहित्यकार महज भाषा के दम पर राजनीति में घुस जाते हैं और छा जाते हैं। **(ग)** 1. चुनाव में खड़ा होकर लेखक साहित्य का दर्जा उठाता, जनता के भविष्य को उज्ज्वल बनाने का प्रयत्न करता। 2. चुनाव में झूठे वायदे करने वाला व्यक्ति जीतता है। 3. लेखक के अनुसार डॉक्टरेट की सम्मानित उपाधि साहित्यकारों के राजनीति में आने और जीतने पर मिलती है। 4. विधायक बनकर लेखक सरकारी खर्च से घूमने, सैर करने, डाकबँगले की खिड़की से पहाड़ निहारने, जीप रुकवाकर नदी देखने, अफसरों के संग झरने के नीचे नहाने, जंगलों में हिरनों के झुंड देखने का इरादा रखता है। 5. मंत्रियों के साथ प्रायः यह होता है कि वे भविष्य के वादे कर मंत्री बनते हैं और अतीत के अपने संबंधों, पिताजी के समय के एहसानों से लदे ब्याज चुकाया करते हैं। किसी का काम करवाते हैं, किसी को लाइसेंस दिलवाते हैं। 6. राजनीति में चुनाव जीतकर लेखक बँगले पर रहने, डनलप पिलो पर सोने, टेलीफ़ोन समीप रख उत्तर-दक्षिण से जुड़े रहने, नौकर-ड्राइवर से खाने को पूछने, उच्च मानवीय गुणों का परिचय देने, चंदे देने, वेतन में से रुपए कटवाकर राष्ट्र की सेवा करने के सपने देखता है। **भाषा की बात– (क)** 1. डॉक्टर 2. फ़सल 3. सहपाठी 4. खिलाड़ी 5. चुनाव **(ख)** अधि+करण, निः+संदेह, खुश+दिल, कु+कर्म, सु+विधा, यथा+योग्य **(घ)** स्वयं करें। **करने की बारी–**स्वयं करें।

15. राजधर्म

(क) 1. ये दोनों 2. फल 3. राजा धर्म विमुख हो गया था 4. नेता से **(ख)** 1. बोधिसत्व ने राजा से 2. राजा ने बोधिसत्व से 3. राजा ने बोधिसत्व से 4. राजा ने बोधिसत्व से 5. राजा ने बोधिसत्व से **(ग)** 1. राजा ने पहले धार्मिक व नैतिक कार्य करके फलों को मीठा किया। उसके बाद राजा ने धर्म विरुद्ध व नीतिविरुद्ध कार्य करके फलों को पहले मीठा, फिर कड़वा किया। 2. अंत में राजा ने यह संकल्प लिया, कि अब मैं फिर फलों को मीठा करूँगा और कभी कड़वा नहीं होने दूँगा। **(घ)** 1. राजा ब्रह्मदत्त स्वभाव से धर्मप्रिय व न्यायी था। 2. राजा ब्रह्मदत्त वेश बदलकर इसलिए घूम रहा था ताकि उसे कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाए, जो उसके दोष बता सके। 3. राजा वेश बदलकर घूमता हुआ हिमालय प्रदेश पहुँचा। घने जंगलों और पर्वतों को पार करता हुआ, वह हिमालय प्रदेश में स्थित बोधिसत्व के आश्रम में जा पहुँचा। 4. क्योंकि राजा के धार्मिक और न्यायप्रिय होने पर सभी वस्तुएँ मधुर और शक्तिवर्धक होती हैं और सारा राष्ट्र शक्तिशाली तथा ओजस्वी बना रहता है। 5. राजा के अधार्मिक और अन्यायी होने पर, जंगल के फल-फूल तथा सभी वस्तुएँ नीरस और कड़वी हो जाती हैं, स्वाद-रहित हो जाती हैं, यही नहीं सारा राष्ट्र ओज-रहित हो जाता है। 6. हाँ **भाषा की बात–(क)** अज्ञान, अन्याय, अधार्मिक, मीठा, असत्य, पुत्री, अवगुण, कुरूप **(ख)** 1. धर्म+ अनुसार 2. हिम+आलय 3. महान+आत्मा 4. पर+उपकार **(ग)** 1. मतलब, धन 2. वंश, योग 3. खाया जाने वाला फल, परिणाम 4. जवाब, एक दिशा 5.

मुख्य, जड़ 6. शब्द, ओहदा। **करने की बारी–**स्वयं करें।

16. पंजाब केसरी लाला लाजपत राय

(क) 1. 1865 में 2. तेरह 3. 1889 ई० में 4. 1905 ई० में 5. 1925 ई० में **(ख)** 1. अरबी, फारसी, उर्दू 2. माता-पिता 3. दुर्भिक्ष कमीशन 4. तिलक 5. हिंदू महासभा **(ग)** 1. श्री राधाकृष्ण 2. श्रीमती गुलाब देवी 3. माता-पिता 4. ढोंढी ग्राम 5. मेरे देश निर्वासन की कहानी **(घ)** 1. लाला लाजपत राय ने अधिवेशन में बंग-भंग के विरुद्ध प्रस्ताव रखते हुए कहा था, ''हमें अपनी भिखारी मनोवृत्ति छोड़ देनी चाहिए। हिंदुस्तान हमारा है और हम हिंदुस्तान के हैं। अपनी वस्तु को लेने के लिए हम गिड़गिड़ाएँ क्यों? हम उसे लेकर रहेंगे। यदि अंग्रेज़ सरलता से नहीं देंगे, तो हम छीनकर लेंगे।'' 2. लाला लाजपत राय ने लोक सेवक मंडल की स्थापना 9 नवंबर, 1921 ई० को की थी। उन्होंने इसकी स्थापना भारत की स्वतंत्रता के लिए वीर और साहसी सैनिक तैयार करने के उद्देश्य से की थी। 3. लाला लाजपत राय का निधन 17 नवंबर, सन् 1928 को हुआ था। 30 अक्टूबर के दिन, साइमन कमीशन का बहिष्कार करने के लिए स्टेशन के बाहर अपार भीड़ एकत्र थी। उस भीड़ का नेतृत्व लाला लाजपत राय कर रहे थे। सहसा पुलिस ने लाठी चलानी आरंभ कर दी। लाठी इनकी छाती में लगी और लाठी के इस आघात से इनकी मृत्यु हो गई। 4. लाला लाजपत राय के अंतिम शब्द थे–मेरी छाती पर जो आघात लगा है, जिस आघात के कारण मैं संसार छोड़ रहा हूँ, वह व्यर्थ नहीं जाएगा। मेरे शरीर पर पड़ी प्रत्येक लाठी, अंग्रेज़ी हुकूमत के ताबूत में कील ठोकने का कार्य करेगी। मेरी छाती पर गिरा हुआ डंडा, ब्रिटिश शासन पर वज्र बनकर गिरेगा और उसका सर्वांत हो जाएगा। **भाषा की बात–(क)** खलबली, समस्त, चोट, दंड **(ख)** आचार, शिक्षित, ध्वंस, पूर्व, हास, अप्रसिद्ध **(ग)** स्वयं करें। **(घ)** बालक-पुल्लिंग, बुद्धिमती-स्त्रीलिंग, जीवन-पुल्लिंग, गुरु-पुल्लिंग, सरकार-स्त्रीलिंग, नेता-पुल्लिंग।

17. बूढ़ा कुत्ता

(क) 1. ये दोनों 2. रानी के पलंग के नीचे 3. दही-भात खिलाया 4. अकेला भागता हुआ **(ख)** 1. सुखद 2 प्रहरी 3. नज़दीक 4. कमबख़्त बुढ़ापा 5. जीवों **(ग)** 1. जब तुरंत नींद लगी हो, तब कुत्ते का भौंकना लेखक को बुरा लगता था। 2. लेखक का बदन सूँघकर कुत्ता उसे यह तसल्ली दिलाना चाहता था कि जाइए, आप निश्चिंत सोइए। 3. नहीं 4. बदन और 'इत्मीनान' उर्दू भाषा के शब्द हैं। इनके हिंदी अर्थ 'शरीर' व 'तसल्ली हैं।' **(घ)** 1. पिल्ला लेखक के घर थकान व गर्मी से परेशान होकर आया। 2. कुत्ता रानी के साथ उनके मायके तक उनकी सुरक्षा के लिए गया। 3. लेखक को कुत्ते पर भरोसा इसलिए था क्योंकि वह लेखक के सो जाने पर पूरे घर की देखभाल करता था। 4. लेखक के घर में एक विदागिरी होने वाली थी। दिन-भर धूमधाम रही, रात में बड़ी देर तक गाँव की स्त्रियाँ आती-जाती रहीं। जब उसके घर के लोग सोने गए, तो ऐसे सोए, कि जैसे घोड़े बेचकर सोए हों और यह कुत्ता घर के सामने आकर गला फाड़-फाड़कर भौंकता रहा। अचानक लेखक की पत्नी रानी की नींद टूटी और वे अपने कमरे से बाहर गईं, तो कुत्ता घर के पीछे की ओर भौंकता हुआ दौड़ा। उन्हें कुछ संदेह हुआ। वे लोगों को जगाने लगीं, शोर करने लगीं। जब रोशनी की गई, देखा गया, घर में सेंध है, कुछ चीज़ें चली गई हैं। किंतु, इस कुत्ते ने ही बचा लिया, नहीं तो उस दिन सर्वनाश ही हो गया होता। 5. लेखक के एक मित्र ने कहा, ''कुचिला खिला दीजिए, मर जाएगा। उनके एक बंदूकधारी मित्र ने सलाह दी, ''गोली से उड़ा देता हूँ।'' **भाषा की बात–(क)** भक्ति, साहस, चोरी, बुढ़ापा, बचपन, दोस्ती **(ख)**

द्+उ+त्+व्+ आ+र्+अ अ+स्+अ+द्+ह्+अ, ह्+इ+म्+म्+अ+त्+अ, क्+अ+र्+त्+अ+व्+य्+अ, आँ+ग्+अ+न्+अ, प्+र्+अ+ह्+अ+र्+ई **(ग)** स्वयं करें। **(घ)** स्वयं करें। **करने की बारी–**स्वयं करें।

18. कर्ण का मित्र-प्रेम

(क) 1. श्रीकृष्ण से 2. ये दोनों 3. केशव 4. दुर्योधन 5. प्रहार **(ख)** 1. जरा यह भी सुनिए 2. किसका 3. मैं पड़ा हुआ। 4. मन में गुनिए। **(ग)** 1. अनमोल रत्न 2. मित्रता को 3. बैकुंठ 4. दुर्योधन के लिए **(घ)** 1. कर्ण ने स्वयं को दुर्योधन का ऋणी बताया क्योंकि उसने उसे मान सम्मान, राज्य व स्नेह दिया था। 2. दुर्योधन के लिए कर्ण स्वर्ग से मुख मोड़ने, बैकुंठ व अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार है। 3. कर्ण ने दुर्योधन की तुलना अनमोल मित्र से की है। 4. कर्ण एक पराक्रमी, दानी व सच्चा मित्र था। 5. धरती की तो है क्या बिसात? आ जाए अगर बैकुंठ हाथ, उसको भी न्योछावर कर दूँ, कुरुपति के चरणों पर धर दूँ। **भाषा की बात–(क)** दोस्ती, सच, आदर, सूरज, प्रेम, पुरुष **(ख) अतिथि–**जिसके आने की तिथि मालूम न हो। **याचक–**याचना करने वाला **(ग)** स्वयं करें।

19. बाढ़ का बेटा

(क) 1. बाघ 2. टापू 3. देवी-देवता 4. फ़सल **(ख)** 1. खेल 2. बाढ़ 3. सुकिया 4. घर 5. सुबह **(ग)** 1. बिसेसर ने हँसकर कहा–''भगवान मालिक हैं सुकिया रानी, फ़सल आएगी और हँसुली के साथ सूद में कर्णफूल भी लाएगी।'' 2. बिसेसर ने सुकिया से हँसुली इसलिए माँगी ताकि वह धान रोपने के लिए उसे गिरवी रखकर बीज खरीद लाए। 3. क्योंकि वह अपनी पत्नी की हँसुली गिरवी रखने जा रहा था। **(घ)** 1. बाढ़ से उत्पन्न स्थिति में बिसेसर अपने घर का कुछ सामान लेकर गाँव की ऊँची व ऊसर ज़मीन पर पहुँचा। दरवाजे पर जहाँ-जहाँ कीचड़ जम गई थी, उसने उसे साफ कर दिया। सड़ी-गली चीजों को बटोरकर एक गड्ढे में डाल दिया। घर में जहाँ-जहाँ गंदगी थी कुदाल से हटा दी। 2. बाढ़ के कारण बिसेसर की दरवाज़े की चीज़ों को सँभालना पड़ा, ढोरों को सँभालना पड़ा, चारे को सँभालना पड़ा, ईंधन को सँभालना पड़ा, नाव को सँभालना पड़ा, जाल को सँभालना पड़ा, कुदाल को सँभालना पड़ा, पतवार को सँभालना पड़ा। वह एक चीज़ को सँभालता, तो दूसरी चीज़ को संकट में देखता। उसे पूरे घर की गंदगी साफ करनी पड़ी। 3. प्रयाग सहनी ने बिसेसर को जाल की मरम्मत करना, नया जाल बनाना सिखाया। जाल के तागे की पहचान सिखाई, जाल को तैयार करना सिखाया। जाल को सँभालना व फेंकना सिखाया। प्रयाग सहनी ने मछली पकड़ने के सारे उपाय भी बिसेसर को सिखाए। 4. धान बोते समय बिसेसर के मन में ये कल्पनाएँ उठ रही थीं-'समय पर यदि खेती हो गई, तो सारी क्षतिपूर्ति हो जाती है। कार्तिक में छाती-भर धान आ जाएगी और माघ आते ही इन खेतों में सरसों का पीला समुद्र लहराने लगेगा।' 5. बिसेसर की दृष्टि में 'रिलीफ़' का अर्थ भीख है क्योंकि उसका मानना है कि अपनी कुदाल व जाल-पतवार से पैसे कमाने के अलावा मुफ्त में कुछ लेना भीख है। **भाषा की बात–(क)** आयु, अधीन, ऐच्छिक, आशीष, कल्याण, सैनिक, भाषाएँ, पत्नी **(ख) आँख–**नेत्र, चक्षु **पानी–**जल, नीर **बादल–**जलद, घटा **देव–**देवता, निर्जर **(ग)** सवाल, पक्की, अस्थिर, शाम **करने की बारी–**स्वयं करें।

21. काशीराज का न्याय

(क) 1. माघ 2. गंगा 3. झोंपड़ों में 4. क्रूर 5. दंड **(ख)** 1. चंपा ने करुणा से 2. करुणा ने चंपा

से 3. काशी नरेश ने लोगों के एक प्रतिनिधि से 4. एक प्रतिनिधि ने काशी नरेश से 5. काशी नरेश ने दरबारियों **(ग)** 1. करुणा और बेला 2. माघ पूर्णिमा के पर्व में 3. क्रूर 4. उसे एकांत की इच्छा है। **(घ)** 1. इस दिन गंगा में स्नान करने से पुण्य की प्राप्ति होती है। 2. महारानी करुणा के गंगा-स्नान के लिए प्रात:काल गंगा घाट पर एक तरफ़ गरीब झोंपड़पट्टी वाले लोगों को वहाँ से महारानी के स्नान करने तक हटा दिया गया। 3. महारानी ने अपनी सर्दी दूर करने के लिए गरीबों के झोंपड़ों में आग लगाने का उपाय बताया। 4. महाराज ने महारानी करुणा को राजमहल का त्याग कर साधारण मनुष्य की भाँति किसी झोंपड़े में एक वर्ष तक परिश्रमपूर्वक जीवनयापन करने का दंड दिया। 5. काशी के महाराज न्यायी थे। काशी के महाराज सत्यप्रिय थे। काशी के महाराज प्रजापालक थे। काशी की महारानी क्रूर थी। काशी की महारानी स्वार्थी थी। काशी की महारानी हृदयहीन थी। **भाषा की बात–(क)** संकेत, क्षमा, शीघ्र, प्रबंध, निर्धन, ओर **(ख)** स्वयं करें। **(ग)** 1. तुमने इस काशी का अपमान किया है। 2. महाराजा की जय हो। 3. इस अपराध का तुम्हें दंड अवश्य मिलेगा। 4. महारानी साधारण वेश में महल से चली गईं। **करने की बारी–**स्वयं करें।

22. सिंगापुर की सैर

(क) 1. एक द्वीप 2. लगभग 35 लाख 3. पर्यटन 4. 1965 में 5. सिंगापुरा **(ख)** 1. चीनी, अंग्रेजी 2. पचास 3. उत्साहित 4. अजायब घर 5. मेरलॉयन स्टेच्यू **(ग)** 1. चौदहवीं शताब्दी में सुमात्रा द्वीप का एक राजकुमार शिकार हेतु सिंगापुर द्वीप पर आया था। इस द्वीप पर सिंहों को देखकर उसने इसका नाम सिंगापुरा अर्थात् 'सिंहों का द्वीप' रख दिया, यह नाम अब बदलकर सिंगापुर बन चुका है। 2. सिंगापुर की स्थापना 1819 में सर स्टेमफोर्ड रेफल्स ने की थी। उन्हें 'ईस्ट इंडिया कंपनी' के अधिकारी के रूप में दिल्ली के तत्कालीन वायसराय द्वारा कंपनी का व्यापार बढ़ाने के लिए सिंगापुर भेजा गया था। पहले यह मलेशिया से जुड़ा हुआ था। सन् 1965 में एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में इसका उदय हुआ। 3. लेखक ने सैंटोसा द्वीप पर मेरलॉयन की आकृति देखी। यहाँ की अनोखी विशेषता 'डॉलफ़िन शो' देखा पानी के नीचे मछलीघर देखा, जिसमें विभिन्न रंग-रूप और आकार वाली मछलियों की अठखेलियाँ देखीं। मोम से बनी मूर्तियों का एक अजायबघर देखा, जिसमें रखी मोम की मूर्तियाँ एकदम सजीव लगती हैं। 4. 'जुरोंग बर्ड' पार्क एशिया का सबसे बड़ा पक्षी पार्क है। इस पार्क में पक्षियों की 600 प्रजातियाँ हैं और 8000 से अधिक पक्षियों का निवास है। पार्क में एक स्थान पर दक्षिणी ध्रुव के समान कृत्रिम बर्फ़ीला वातावरण तैयार किया गया है, जिसमें पेंग्विन पक्षी रखे गए हैं। 30 मीटर ऊँचा मानव निर्मित जल-प्रपात इसकी सुंदरता में चार चाँद लगा देता है। पार्क में एक अनूठा शो 'ऑल स्टार बर्ड' दिखाया जाता है, जिसमें पक्षियों को टेलीफ़ोन के माध्यम से बातें करते हुए दिखाते हैं। 5. 'मेरलॉयन सिंगापुर का प्रसिद्ध चिह्न है। इसका सिर शेर जैसा तथा नीचे का हिस्सा मछली जैसा है। **भाषा की बात–(क)** अप्रसिद्ध, निर्जीव, प्राकृतिक, मंद **(ख)** उत्साहित, नागरिक, भव्यता, भारतीय, धार्मिक, प्रफुल्लित, अनुशासित, ऐतिहासिक **(ग) फूल**–प्रसून, कुसुम **पक्षी**–खग, चिड़िया **सिंह–** केसरी, शेर **जंगल**–वन, अरण्य **चाँद**–चंद्रमा, शशि **(घ)** स्वयं करें। **करने की बारी**–स्वयं करें।

23. महाश्वेता देवी

(क) 1. ढाका में 2. इन दोनों में 3. झाँसी की रानी 4. 1997 में 5. हज़ार चौरासी की माँ **(ख)** 1. समाज सेविका 2. धारित्री देवी 3. कवि 4. आर्थिक तंगी 5. हृदयघात **(ग)** 1. महाश्वेता का

जन्म एक सभ्य, सुसंस्कृत व समृद्ध परिवार में हुआ था। 2. घर का वातावरण बालिका महाश्वेता के विकास में बड़ा सहायक बना। 3. महाश्वेता की माता को समाज-सेवा का शौक था। 4. महाश्वेता को अपने माता-पिता से काव्य, लेखन व समाज-सेवा के गुण विरासत में मिले थे। **(घ)** 1. महाश्वेता देवी की प्रारंभिक शिक्षा ढाका और कोलकाता में हुई। शांति निकेतन से उन्होंने अंग्रेज़ी साहित्य में बी०ए० (आनर्स) की परीक्षा उत्तीर्ण की। कोलकाता विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी साहित्य में एम०ए० की उपाधि प्राप्त की। 2. महाश्वेता का परिवार सभ्य, सुसंस्कृत व समृद्ध परिवार था उनके पिता मनीषचंद्र घटक प्रसिद्ध कवि और लेखक थे। उनकी माँ धारित्री देवी भी एक लेखिका थीं। वे अन्य भाषाओं से बंगला में अनुवाद भी करती थीं। समाज-सेवा करने का भी उन्हें शौक था। 3. विवाह के बाद महाश्वेता देवी को बड़ी आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ा। उनके पति बिजन भट्टाचार्य की कोई आमदनी नहीं थी और महाश्वेता देवी के पास भी आय का कोई साधन नहीं था। नौकरियाँ उन दिनों आसानी से नहीं मिलती थीं। अपने परिवार से मदद माँगने में महाश्वेता देवी का स्वाभिमान आड़े आता था। कोई काम न मिला, तो महाश्वेता घर-घर जाकर अगरबत्तियाँ बेचने का काम करने लगीं। 4. महाश्वेता देवी ने अपनी रचनाओं में महिलाओं और आदिवासियों के दु:ख-दर्द को उभारा है। 5. आदिवासियों के उत्थान के लिए महाश्वेता देवी ने एक 'आदिवासी कल्याण केंद्र' खोला, जहाँ आदिवासियों को शिक्षित करने, दस्तकारी का काम सिखाने, स्वास्थ्य संबंधी प्रशिक्षण देने की व्यवस्था है। वे एक पत्रिका भी प्रकाशित करती थीं, जिसमें आदिवासी स्वयं अपनी समस्याओं के बारे में लिखते हैं। **भाषा की बात–(क)** रचना, कहानी, आदिवासी, उपन्यास, महिला, उपाधि **(ख)** स्त्री, पुत्री, पिता, वृद्धा, लेखक, राजा **(ग)** स्वयं करें। **करने की बारी–** स्वयं करें।